नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

फिर ना हो महाकाल मंदिर जैसा हादसा

धुलेंडी के अवसर पर उज्जैन के महाकाल मंदिर में भस्मारती के दौरान आग लग गई. इसकी चपेट में पुजारी, पंडे और सेवकों सहित कुल 14 लोग झुलस गए. घटना के दौरान देश-विदेश से आए हजारों श्रद्धालु मंदिर में मौजूद थे. कुछ पुजारी गंभीर घायल बताए गए हैं. बाकी लोगों की हालत सामान्य बताई गई है. आधा दर्जन से अधिक पुजारियों को उपचार के लिए इंदौर रेफर किया गया था. हादसे के जांच के आदेश दे दी गए हैं. मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव ने मौके पर पहुंचकर जानकारी हासिल की और उन्होंने इंदौर जाकर घायल पुजारियों से भी चर्चा की है. सभी घायलों को शासकीय खर्चे पर इलाज मिलेगा. इसके अलावा घायलों को एक लाख रुपए की सहायता राशि भी मिलेगी. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह ने भी हादसे के संबंध में मुख्यमंत्री से चर्चा की है. जाहिर है हादसे के बाद शासन और प्रशासन द्वारा जो जो किया जा सकता है, वह किया जा रहा है. सवाल यह है कि लापरवाही कैसे और क्यों हुई? इसमें कोई शक नहीं कि महाकाल मंदिर में कई तरह के दलाल और ऐसे पुजारी मौजूद हैं जो लगातार भ्रष्ट तरीकों से श्रद्धालुओं को मंदिर में प्रवेश कराते हैं. जाहिर है ऐसे श्रद्धालुओं की सुरक्षा जांच मुकम्मल तरीके से नहीं की जाती. महाकाल मंदिर में वीआईपी कल्चर भी बहुत ही भद्दे ढंग से लागू है. महाकाल लोक बन जाने के बाद से लगभग रोज एक लाख श्रद्धालु प्रतिदिन आ रहे हैं. ऐसे में मंदिर प्रशासन की जिम्मेदारी बहुत अधिक बढ़ जाती है. हादसे से जाहिर है कि जिम्मेदार लोगों ने सुरक्षा के मामले में घोर लापरवाही बरती है. हालांकि जैसा होता है हादसे के बाद प्रशासन सतर्क होता है और कार्रवाई में तेजी लाई जाती है. वैसा ही महाकाल मंदिर के मामले में हो रहा है. अब मंदिर प्रशासन कई कदम उठाने जा रहा है .समिति इस घटना के बाद व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन का प्लान तैयार कर रही है .नई व्यवस्था को जल्द लागू किया जाएगा. दावा किया जा रहा है कि समिति भस्म आरती व वीआइपी दर्शन में कोटा सिस्टम भी समाप्त करेगी.

दरअसल, होली पर गर्भगृह में हुए अग्निकांड में की जा रही पड़ताल में जो प्रारंभिक खामियां सामने आई है, उसमें मंदिर समिति द्वारा तय किए गए निर्धारित नियमों का पालन नहीं करना, गर्भगृह में निर्धारित संख्या से अधिक लोगों की मौजूदगी तथा नंदी हाल में अत्यधिक रंगों का उपयोग करना सामने आया है. महाकाल मंदिर के संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट ने एक एक्सपोर्ट कमेटी गठित की थी जिसने कुछ महत्वपूर्ण सुझाव दिए थे. होली के दिन हुआ हादसा बताता है कि इन सुझावों को रद्दी की टोकरी में डाल दिया गया लगता है. अन्यथा यह हादसा नहीं होता. सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित एक्सपर्ट कमेटी ने महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग का क्षरण रोकने के लिए भगवान को सीमित मात्रा में जल, पंचामृत, अबीर, गुलाल, कुमकुम आदि पूजन सामग्री तथा कम मात्रा में फूल तथा भगवान को छोटी-छोटी फूल माला अर्पित करने का सुझाव दिया था .एक्सपर्ट कमेटी ने गर्भगृह का तापमान नियंत्रित रखने के लिए एक साथ कम संख्या में लोगों के गर्भगृह में मौजूद रहने का भी सुझाव दिया था.

एक्सपर्ट कमेटी ने भगवान महाकाल का आरओ जल से अभिषेक करने तथा कैमिकल रहित पूजन सामग्री अर्पित करने का सुझाव दिया था. जाहिर है इन सुझावों पर अमल नहीं किया जा रहा है. दरअसल, पुजारी, पुरोहित होली रंगपंचमी तथा प्रमुख पर्वों पर गाइड लाइन का पालन नहीं करते. भगवान को भारी मात्रा में गुलाल, सैकड़ों लीटर कलर तथा क्विंटलों से फूल अर्पित कर रहे हैं. 24 मार्च को होली पर तड़के भस्म आरती में भगवान को 51 क्विंटल फूल अर्पित किए गए थे. भगवान को भोग अर्पित करने में भी बिचौलिए सक्रिय हैं. शिव नवरात्र के नौ दिन बाहर के दानदाताओं ने बिचौलियों के माध्यम से भगवान को नौ दिन तक क्विंटलों ड्रायफ्रूट का भोग लगाया. मंदिर समिति के पास इसकी रिकार्डिंग भी है. कुल मिलाकर ऐसा लगता है कि महाकाल मंदिर में एक माफिया सक्रिय है जो सारी व्यवस्थाओं पर भारी है. इस माफिया का समूल नाश किया जाना चाहिए. इस तरह का हादसा फिर से ना हो यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए. साथ ही लापरवाह अधिकारियों और पुजारियों पर कठोर कार्रवाई भी की जानी चाहिए जिससे भविष्य में कोई ऐसा करने के पहले दस बार विचार करे.

अच्छी मुद्रा चलन से बाहर की राजनीति

डॉ. विनोद मिश्रा

> गुलजारी लाल नंदा की ईमानदारी, सादा जीवन, भ्रष्टाचार के खिलाफ जागृत अभियान था. पं. जवाहर लाल नेहरू ने अपने एक मंत्री को इसलिये पद से अलग कर दिया था क्योंकि उसने किसी उद्योगपति से दस हजार का चंदा मांगा था (लिया नहीं था). ये उच्च स्तरीय नैतिकतायें, भ्रष्टाचार के खिलाफ ब्रम्हास्त्र हैं. जो शनै : शनै : कमजोर हो रही है. पूर्व एवं वर्तमान परिदृश्य का उदाहरण - जब आज से 4-5 दशक पूर्व कोई रिश्वत की बात करता था तो व्यक्ति कहता था कि 'हमारे बाल बच्चे हैं. इसका परिवार पर असर पड़ेगा.' अब वर्तमान परिदृश्य में रिश्वत लेने वाला लेते हुये तर्क देता है कि 'हमारे भी बाल बच्चे हैं'. इस व्यवस्था की धुरी पक्ष एवं विपक्ष दोनों बन रहे हैं. 'इलेक्ट्राल बॉन्ड' इसका स्पष्ट उदाहरण है. अब यह अलग बात है कि सबके अपने अपने पक्ष के चट्टान से भी ज्यादा मजबूत तर्क हैं.

वर्तमान राजनीति में प्रांतीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर पर जो परिस्थितियाँ बन रही हैं. उस पर अर्थशास्त्र के अर्थशास्त्री का यह कथन पूर्णत: सही प्रतीत होता है कि, 'बुरी मुद्रा, अच्छी मुद्रा को चलन से बाहर कर देती है.' आज कमोवेश राजनीति में यही स्थिति बन रही है. निष्ठा, प्रतिबद्धता, सत्यता, ईमानदारी, कार्य के प्रति समर्पण सैद्धान्तिक बन गये हैं. आज राजनीति में, सत्ता में बने रहने के लिये साम, दाम, दंड, भेद प्राथमिक गुण बन गये हैं. यह वृत्ति तेजी से फैल रही है. बल का प्रभाव, अर्थ का प्रभाव निष्ठायें बन गई हैं. ईमानदार, समर्पित, निष्ठावान राजनीति से बाहर जा रहा है अथवा उच्चस्तरीय षडयंत्र के तहत चलन से बाहर किया जा रहा है. यह देश के लोकतंत्र के लिये अत्यन्त घातक स्थिति है.

अटलजी ने कहा ऐसी सत्ता चिमटी से भी नहीं छुऊँगा लोकसभा के उस परिदृश्य में ध्यान कीजिये. जब अटल जी की सरकार के प्रति अविश्वास आया था तथा अटलजी की सरकार 'मात्र एक वोट' से गिर गई थी. वे देश के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता एवं देश के प्रधानमंत्री थे. वे चाहते तो सत्ता के लिये (साम, दाम, दंड, भेद) नीति का प्रयोग कर 'एक वोट' मैनेज कर सकते थे. लेकिन पं. दीनदयाल उपाध्याय एवं डॉ. मुखर्जी के प्रिय पं. अटल बिहारी बाजपेयी जी ने सरकार का गिरना स्वीकार किया तथा लोकसभा में कहा 'यदि गलत गठबंधन से, गलत तरीके से सरकार आती है तो ऐसी सत्ता को मैं चिमटे से छूना भी पसंद नहीं करूँगा'. सरकार तो गिर गई, लेकिन देश के लोकतंत्र की जड़ें मजबूत हो गई और अटल जी का आम जन के दिलों में राज हो गया. आस्तिक, नास्तिक हो गया, नास्तिक आस्तिक? मैं एक कहानी पढ रहा था. एक गांव में एक आस्तिक था,

उसी गांव में एक नास्तिक भी था. आस्तिक गांव वालों से कहता था, भगवान, ईश्वर होता है. वही सर्वकर्ता है अत: आप सभी आस्तिक हो जायें. नास्तिक कहता था कि ईश्वर नहीं होता. यह कपोल कल्पना है अत: सभी नास्तिक हो जायें. उन दोनों से गांव वाले परेशान थें एक दिन तय हुआ कि इन दोनों को बैठाया जाये. सभी गांव वालों के सामने इनका शास्त्रार्थ हो जो सही होगा, उसकी बात मान ली जायेगा. निर्धारित समय स्थान पर गांव वाले आये. नास्तिक, आस्तिका भी आये. रात्रि के बाद 'वाद-विवाद' प्रारंभ हुआ. जो सुबह 4 बजे तक चला. बाद में पता चला कि आस्तिक, नास्तिक हो गया एवं नास्तिक, आस्तिक हो गया. गांव वालों की समस्या जहाँ की तहाँ है. आज सम्पूर्ण देश में नास्तिक के आस्तिक होने की तथा आस्तिक के नास्तिक होने की दौड़ मची हुई है. देश एवं प्रदेश की समस्या जहाँ की तहाँ है. नास्तिक, आस्तिक होने के कारण बता रहा है तथा आस्तिक, नास्तिक होने के तर्क दे रहा है, और दल-बदल जारी है. देश का संविधान, देश का लोकतंत्र, देश का जन-मन इस 'आधुनिक रामलीला' को टकटकी लगाये निहार रहा है. क्या करे बेचारा?

पंच निष्ठायें, भस्मीभूत हो रही हैं- हमने तो अपने नेताओं से 1980 के बाद निरंतर पंच निष्ठाओं का पाठ 'रामायण' एवं श्रीमद् भागवत जैसा पढा एवं उसे आत्मसात किया. जिनमें राष्ट्रीय एकात्मता, लोकतंत्र, गांधीवादी समाजवादी दर्शन, मूल्यों पर आधारित राजनीति, सर्वधर्म समभाव प्रमुख थे. ये सभी हमारे शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा में समाहित थे. लेकिन वर्तमान परिदृश्य इनको अलग तरह से परिभाषित कर रहा है. देश की राष्ट्रीय अखंडता, राष्ट्रीय एकात्मता पक्ष की परिभाषा अलग तो विपक्ष की परिभाषा अलग? चुनाव जीतने हारने के लिये इन्हें परिभाषित किया जाता है जो भूमिका बदलने से परिभाषा को भी बदल देते हैं. राष्ट्रीय एकात्मता गर्व अभिमान का विषय नहीं बल्कि चुनावी मुद्दा बन गया है. लोकतंत्र का भी कमोवेश यही हाल है. जो कभी खतरे में पड़ता है, कभी बाहर आ जाता है. जो दल की परिस्थितियों पर आधारित होता है. पहले मूल्यों पर आधारित राजनीति का मतलब था ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, प्रतिबद्धता, समर्पण, त्याग. लेकिन अब मूल्यों का स्थान मूल्य ने ले लिया हैं पहले एक कहावत थी धन गया, कुछ नहीं गया, स्वास्थ्य गया तो कुछ गया तथा यदि चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया. लेकिन अब इसका उल्टा हो गया है.

रूस में आतंकी हमला पुतिन को चुनौती

रूस जैसा शक्तिशाली देश भी आईएसआईएस के आतंकी हमले से हिल गया. 22 मार्च को पश्चिमी मास्को के क्रोकस सिटी हॉल में चल रहे कॉन्सर्ट के दौरान आतंकियों ने फिदायीन हमला करके 300 लोगों पर अंधाधुंध गोलियां बरसाईं जिससे 97 लोग मौके पर ही मारे गए जिनमें बड़े पैमाने पर बच्चे और बूढ़े शामिल थे. मरने वालों की कुल संख्या 137 को पार कर चुकी है. इन आतंकियों की शिनाख्त से पता चला कि ये आईएसआईएस के खूनी लड़ाके हैं और मध्य एशिया के देशों के कट्टरपंथी मुस्लिम युवक हैं. इस भीषण आतंकी हमले से रूस का जनमानस शोक में डूब गया और झंडे को आधा झुका दिया गया. रूसी राष्ट्रपति पुतिन ने 25 मार्च को घोषणा की कि वह उन ताकतों को उखाड़ फेकेंगे जिन्होंने रूस पर कायराना हमला किया.

कॉन्सर्ट हाल में हमला करनेवाले इस्लामिक कट्टरपंथी थे, जो इस घटना को अंजाम देने के बाद भागकर यूक्रेन में घुसने की कोशिश कर रहे थे. बताया जाता है कि इस आशंकित हमले की खुफिया जानकारी अमेरिका ने रूस की खुफिया एजेंसी को गत 7 मार्च को ही दे दी थी और यह भी कहा था कि मास्को के लोग किसी सार्वजनिक कार्यक्रम में हिस्सा न लें. विशेषकर मास्को के कॉन्सर्ट हाल में ही हमले की आशंका जताई गई थी. इस चेतावनी को रूस ने गंभीरता से नहीं लिया. उसे लगा कि अमेरिका उसे बरगलाने की कोशिश कर रहा है. कई बार हमदर्द बनने की आड़ में कई देश एक दूसरे को व्यर्थ ही उलझाने में पीछे नहीं रहते. इतने पर भी जब अमेरिका की जासूसी एजेंसियों को यह साजिश मालूम हो गई थी तो रूस की खुफिया एजेंसियों को पता क्यों नहीं चल पाया? यह भी संदेह है कि कहीं 1 वर्ष से ज्यादा समय से चल रहे रूस-यूक्रेन युद्ध के दौरान अमेरिका रूस को उसके घर में ही फंसाने की कोशिश तो नहीं कर रहा है? पिछली सदी में अमेरिका ने रूस को अफगानिस्तान में मुजाहिदीनों से भिड़ा दिया था. पुतिन भी सख्त मिजाज के तानाशाह हैं जो इस्लामिक कट्टरपंथ को उसी तरह सबक सिखाने की कोशिश करेंगे जैसा चीन ने उइगर कट्टरपंथियों के साथ किया था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

ग्वालियर चंबल डायरी

अति आत्मविश्वास से दूर रहने नेताओं को कस रही भाजपा

हरीश दुबे

ग्वालियर में कमल दल के चुनाव अभियान की फिलहाल धीमी रफ्तार से प्रदेश नेतृत्व नाराज है. होली के ऐन पहले भोपाल में बुलाई कोर कमेटी की बैठक में ग्वालियर जिले के लगभग सभी प्रमुख नेता मौजूद थे. बैठक में प्रत्याशी के नाम के ऐलान के बाद से अब तक के चुनाव अभियान की सारी कमी पेशियों पर गौर किया गया. लुब्बोलुआब यही निकला कि इतने से काम नहीं चलेगा, तेजी और फुर्ती की जरूरत है. लिहाजा अब डेली मॉनिटरिंग की जा रही है. पार्टी चुनाव अभियान में हर नेता और कार्यकर्ता का योगदान चाहती है, बैठक से ग्वालियर लौटने के बाद नेताओं ने भोपाल से मिले निर्देशों पर अमलोदरफ्त शुरु कर दिया है. हालांकि पार्टी के प्रत्याशी भारत सिंह बिना किसी शिकायत शिकवा के प्रचार अभियान में जुटे हैं लेकिन भोपाल में बैठे नेता ग्वालियर चंबल में कोई रिस्क मोल लेना नहीं चाहते, यही वजह है कि ग्वालियर के नेताओं को कसा गया है. दरअसल, भारत सिंह अब तक ग्रामीण क्षेत्र में ज्यादा सक्रिय रहे हैं. पार्टी के चुनाव प्रबंधक चाहते हैं कि ग्वालियर की शहर इकाई नगरीय क्षेत्र में माहौल बनाने में जुट जाएं, वैसे ग्वालियर संसदीय क्षेत्र में शामिल आठ विधानसभा सीटों में से तीन ही नगरीय क्षेत्र में आती हैं, बाकी पांच सीटें ग्रामीण क्षेत्र की ही हैं.

चोट खाए नेता नहीं करेंगे घर वापसी

बसपा के स्टार प्रचारकों की फेहरिस्त में चंबल के तीन नेताओं रुस्तम सिंह, रामलखन सिंह और संजीव सिंह कुशवाह के नाम शुमार किए जाने से एक बात साफ हो गई है कि पिछले विधानसभा चुनाव के वक्त कमल का फूल छिटककर हाथी की सवारी करने वाले मंत्री, सांसद और विधायक रह चुके इन तीनों नेताओं की घर वापसी की फिलहाल कोई उम्मीद नहीं है. ऐसी अटकलें लग रही थीं कि लोकसभा चुनाव के दौरान अन्य दलों के नेताओं को भाजपा ज्वाइन कराने के अभियान में इन नेताओं के नाम भी जुड़ सकते हैं लेकिन तीनों नेताओं का साफ संकेत है कि वे भाजपा में लौटने के बजाए फिलहाल बसपा से ही जुड़े रहकर भविष्य की राजनीति करेंगे. भिंड से विधायक रह चुके संजीव सिंह के लिए घर वापसी का पिछला अनुभव कटु ही रहा है, लिहाजा वे अब संभल कर ही भविष्य की राजनीतिक दिशा तय कर रहे हैं. ठीक यही बात चार बार सांसद रह चुके उनके पिता रामलखन और मुरैना के रुस्तम सिंह पर लागू होती है.

और यहां हो रहा धुंआधार मुकाबला

उधर चंबल की भिंड संसदीय सीट पर भाजपा और कांग्रेस के बीच धुंआधार चुनावी संघर्ष चल रहा है. मौजूदा भाजपा सांसद संध्या राय ने इस सीट पर कब्जा बरकरार रखने के लिए पूरी ताकत झोंक दी है जबकि कांग्रेस उम्मीदवार फूलसिंह बरैया भी अपने तईं कोई कसर बाकी नहीं छोड़ना चाहते. बरैया ने तीन महीने पहले ही इसी संसदीय क्षेत्र की भांडेर विधानासभा सीट पर भाजपा को हराकर अपनी ताकत दिखाई है, उनके चुनाव अभियान में सहयोगी बनने के लिए प्रदेश भर से उनके समर्थक जुट रहे हैं, कांग्रेस से टिकट की दौड़ में शामिल रहे देवाशीष जरारिया और महेंद्र बौद्ध जैसे नेताओं की मान मनौव्वल का सिलसिला भी जारी है. उधर अपनी प्रत्याशी को एंटी इनकम्बेंसी से बचाने भाजपा संगठन ने भी अपने कार्यकर्ताओ को मैदान में उतार दिया है.

केपी को राज्यसभा का भरोसा

गुना शिवपुरी सीट से टिकट कटने के बाद केपी यादव की नाराजगी को भुनाने के लिए कांग्रेस ने पूरी ताकत लगाई लेकिन केपी टस से मस नहीं हुए. कांग्रेस उन्हें उनके पुराने प्रतिद्वंदी सिंधिया के खिलाफ टिकट देकर चुनाव मैदान मे उतारना चाहती थी लेकिन केपी को टिकट से वंचित रहने के बावजूद कांग्रेस के बजाए भाजपा में ही अपना भविष्य ठीक नजर आ रहा है. खबर यह है कि उन्हें सिंधिया के चुनाव जीतने की स्थिति में खाली होने वाली राज्यसभा सीट से नुमांइदगी देने का भरोसा मिला है. केपी के समर्थक मानकर चल रहे हैं कि यदि राज्यसभा में नहीं भी भेजा गया तो किसी वजनदार निगम बोर्ड की अध्यक्षी तो कहीं नहीं गई. उन्हें भाजपा में रोके रखने में सीएम मोहन यादव के प्रयास भी चर्चा में हैं.

निशानेबाज

सीधे बीजेपी की राह पकड़ी, उद्योगपति जिंदल की जिंदादिली

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, जिस तरह सारी नदियां जाकर समुद्र में मिलती हैं, ऐसे ही विपक्षी पार्टियों के कितने ही नेता राष्ट्रीय विचारधारा के प्रवाह से जुड़कर बीजेपी रूपी महासागर में समाहित हो रहे हैं. आपने गीत सुना होगा- ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में, सागर मिले कौन से जल में, कोई जाने ना!

हमने कहा, जो विपक्षी नेता बीजेपी में शामिल हो रहे हैं, उनका बीजेपी या आरएसएस की विचारधारा से कोई लेना-देना नहीं है. वे सब ईडी, सीबीआई, इनकम टैक्स जैसी जांच एजेंसियों के भय से बीजेपी में शरण ले रहे हैं. इस बेहद जरूरी पार्टी या भारी जबरदस्त पार्टी या बहुत जानदार पार्टी में जाकर उन्हें अभयदान मिल जाता है. जांच एजेंसियों का ग्रहण दूर हो जाता है. भ्रष्ट नेताओं का कष्ट दूर हो जाने से उन्हें शांति मिलती है. बीजेपी उनके लिए परम धाम है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, उद्योगपति नवीन जिंदल 10 वर्ष कांग्रेस में रहने के बाद बीजेपी में शामिल हो गए. इस तरह घोटाले और भ्रष्टाचार की काली छाया उन्हें छू भी

नहीं सकती. किसी भी जांच एजेंसी की आंच उन्हें नहीं लगेगी. ऐसा मानकर चलिए कि जो बीजेपी को भजे, वही परमपद पाएगा! इस चाल, चरित्र और चेहरा वाली पार्टी के पावन कुंड में डुबकी लगाते ही सारे पाप मिट जाते हैं.

हमने कहा, जिंदल के बीजेपी में शामिल होने पर कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने कहा कि प्रधानमंत्री कांग्रेस मुक्त भारत चाहते थे, इसके बजाय उन्होंने भ्रष्ट कांग्रेसियों को अपनी शरण में लेने को मजबूर करने के उद्देश्य से ईडी और सीबीआई के साथ- साथ कई वाशिंग मशीनें तैनात कर एक भ्रष्टाचारी मुक्त कांग्रेस बनाई है.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जिंदल के कदम से और भी सिंघल- बिंदल बीजेपी में जाने की सोचेंगे. जो जिंदादिल होता है, वही जिंदल होता है. आल्हा, ऊदल के बाद जिंदल को याद रखिए. आपने शेर सुना होगा जिंदगी जिंदादिली का नाम है, मुर्दादिल क्या खाक जिया करते हैं. जिंदादिल इंसान प्रतिकूलता के बीच अपना रास्ता बना लेता है. जिंदल ने विचार किया कि अब की बार 400 पार वाली पार्टी के साथ जाएं तो बेड़ा पार हो जाएगा. वफा का सौदा करनेवाले उद्योगपति या बिजनेसमैन वही काम करते हैं जिसमें नफा हो.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11498

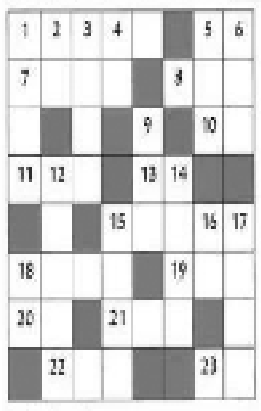

ऊपर से नीचे

1. लतीफा, छोटी विनोदपूर्ण बात 2. स्वाद, वनस्पतियों फलों आदि का निचोड़ा हुआ तरल अंश, 3. चुकता या बेबाक कराना, अदा कराना, 4. राजा, अनुरक्त होना, 5. तांबे या पीतल की बड़ी बटलोई, 6. शरमाना, 9. स्वभाव, जीवन में किये जाने वाला काम या आचरण, 12. डगमगाना, झोंका खाकर नीचे आना, 14. आवाज देना, चिल्लाकर बुलाना, 15. पानी से धोना, 16. खाली, 17. वस्तु शरीर आदि की वह गर्मी या सर्दी की वह स्थिति जो कुछ विशेष प्रकार से नापी जाती है, 18. गोंद

बाएं से दाएं

1. चुरचुर शब्द होना या करना, 5. समय का वह विभाग जो 24 सेकंड के बराबर होता है, 7. टीस मारना, खिसकना, 8. भाई का पुत्र, 10. कहीं से कोई वस्तु लेकर आना, देना या सामने रखना, 11. लाड़ या दुलार करना, इच्छा करना, प्यार करना, 13. शत्रु, बैरी, 15. पत्रकार का पेशा या व्यवसाय, 18. कस्तूरी यादि का बना एक सुगंधित द्रव्य जो मूर्च्छित व्यक्ति को होश में लाता है, 19. रक्त पीने वाला राक्षस, 20. जो खराब या निकृष्ट हो चुका हो, 21. कोई शब्द या बात बार बार कहना, 22. कहकर मुकर जाना, 23. देने का कार्य, खैरात.

Solution 11497

ज्योतिषाचार्य पं. नारायणशंकर नाथूराम व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आजीविका के क्षेत्र मेंदौड़धूप और परिश्रम करना होगी. व्यर्थ मनमुटाव रहेगा. वाद विवाद से बचने का प्रयास करें. शिक्षा में व्यवधान होगा. वर्ष के मध्य में शासन सत्ता से सुख शुभ सूचना प्राप्त होगी. नौकरी व्यवसाय में सफलता मिलेगी. वर्ष के अन्त में विशेष वृद्धि होगी. संतान का सुख प्राप्त होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को शासन से शुभ सूचना प्राप्त होगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को स्थाई संपत्ति में वृद्धि होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को नौकरी व व्यवसाय में सफलता मिलेगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम की अधिकता रहेगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आजीविका के क्षेत्र में परिश्रम होगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को नियोजित कार्यों में सफलता प्राप्त होगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को व्यापार में लाभ प्राप्त होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, सुशील, होशियार होगा. सर्विस की ओर अधिक झुकाव रहेगा. कार्यकुशल तथा परिश्रमी होगा. मित्रों की संख्या सीमित रहेगी. जन्म स्थान से दूर रहकर अपनी उन्नति करेगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

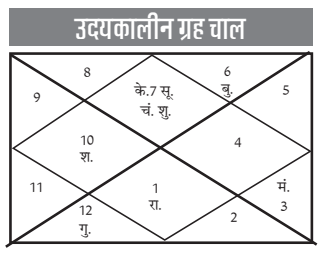

पंचांग

रा.मि. 8 संवत् 2080 चैत्र कृष्ण तृतीया गुरूवासरे दिन 4/19, स्वाती नक्षत्रे दिन 4/24, हर्षण योगे रात 9/12, विष्टि करणे सू.उ. 5/54 सू.अ. 6/6, चन्द्रचार तुला, पर्व- संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत, शु.रा. 7, 9, 10, 1, 2, 5 अ.रा. 8, 11, 12, 3, 4, 6 शुभांक- 9, 2, 6.

व्यापार भविष्य

चैत्र कृष्ण तृतीया को स्वाती नक्षत्र के प्रभाव से मैथी धनियां, हल्दी, जीरा, आदि में तेजी होगी. सोना, चांदी, शेयर आदि में मोती, बिनौला, लोहा, में तेजी का रूख रहेगा. आज वायदा विचार में मंगल के बने भाव घटें, उसी में तेजी होगी. भाग्यांक 1599 है.

मेष- आप बेहतर तरीके से काम निपटाने का प्रयास करेंगे. सहयोगी आपका विरोध कर सकते है. व्यापार व्यवसाय में लाभ सामान्य ही रहेगा.

वृषभ- थोडी परेशानी के बादजूद आपकी सफ्लता सुनिश्चित है, सुख सुविधाओं में वृद्धि होगी. यश, मान सम्मान प्राप्त होगा. पूज्य व्यक्ति की समस्या का हल होगा.

मिथुन- मन में चल रही उलझन आपको फैसला लेने में रोकेगी. राजकीय कार्योंमें सफ्लता मिलेगी. लाभदायक योजना की रूपरेखा पर विचार विमर्श होगा.

कर्क- बुजुर्गों के स्वास्थ्य संबंधी चिन्ता रहेगी, जोखिम केकार्यो से दूर रहें. आवेश में लिया गया निर्णय नुकसानदायक रहेगा. व्यापारिक समस्याओं का समाधान होगा.

सिंह- कड़ी मेहनत से शानदार परिणाम मिलेंगे, अनावश्यक टकराव छोड़कर काम पर ध्यान दें. किसी दूर गये मित्र के संबंध में शुभ समाचार मिलेगा.

कन्या- रूकी हुई योजना फिर से शुरू करने का मन बनेगा. पारिवारिक सुख तथा सौहार्द बना रहेगा. नवीन योजनाओं का शुभारंभ होगा.

तुला- नए कारोबार में निवेश की संभावना बनेगी. पारिवारिक मामले उलझने से चिन्ता होगी. अपव्यय पर नियंत्रण रखें. संपत्ति वाहनादि का सुख प्राप्त होगा.

वृश्चिक- युवाओं को कैरियर में आ रही परेशानियों से छुटकारा मिलेगा. वाकपटुता पर नियंत्रण रखें. मित्रता उपयोगी रहेगी. परिश्रम अधिक करना होगा.

धनु- अपनी ताकत का इस्तेमाल विरोधियोंको रोकने में करना पड़ेगा. वाहनादि का सुख प्राप्त होगा. भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी. मित्रवर्ग आपकी मदद करेंगे.

मकर- व्यर्थ के झगड़े में आपका समय बर्बाद हो सकता है. मांगलिक खर्च संभव है. अतिथि आगमन होगा. हर्ष बना रहेगा. पूज्य व्यक्ति की सलाह लाभदायक सिद्ध होगी.

कुम्भ- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी. कार्य विस्तार की संभावना है. आत्म विश्वास एवं मनोबल बना रहेगा. इच्छित कार्यो की पूर्ति होगी.

मीन- दूसरों की आलोचना से घबराकर कार्य योजना बीच में ही छोड़ सकते हैं. सोचे हुये कार्यो में सफ्लता के योग है. मित्रों एवं सहयोगियों का सहयोग प्राप्त होगा.

SUDOKU 6630

7	4	6		1		8		2
	5		8		7			
9				6				
	6		7	9		5		3
5				4				1
3		1		8	2		7	
				5				6
			4		3		9	
4		3		2		1	5	7

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकु 6629

8	7	9	4	2	5	6	1	3
5	6	3	8	1	7	4	2	9
4	1	2	6	9	3	5	8	7
1	9	8	3	7	4	2	6	5
7	3	4	2	5	6	8	9	1
2	5	6	1	8	9	7	3	4
9	8	5	7	3	2	1	4	6
6	2	7	9	4	1	3	5	8
3	4	1	5	6	8	9	7	2